# अथ नवमोऽध्यायः

# राजविद्याराजगुह्ययोग

## (परम गोपनीय ज्ञान)

**श्रीभगवानुवाच ।**
**इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे ।**
**ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ।।१।।**

**श्रीभगवान् उवाच**=श्रीभगवान् ने कहा; **इदम्**=इस; **तु**=केवल (शुद्धभक्ति लक्षण); **ते**=तेरे लिए; **गुह्यतमम्**=परम गोपनीय; **प्रवक्ष्यामि**=कहूँगा; **अनसूयवे**=ईर्ष्यारहित; **ज्ञानम्**=ज्ञान को; **विज्ञानसहितम्**=विज्ञान के साथ; **यत्**=जिसे; **ज्ञात्वा**=जानकर; **मोक्ष्यसे**=मुक्त हो जायगा; **अशुभात्**=इस दुःखमय संसार से।

### अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, हे अर्जुन! तुझ ईर्ष्यारहित शुद्धभक्त के लिए इस परम गोपनीय ज्ञान को विज्ञान सहित कहूँगा, जिसे जानकर तू संसार के क्लेशों से मुक्त हो जायगा।।१।।

### तात्पर्य

भक्त भगवान् की कथा को जितना अधिक सुनता है, उतना ही प्रबुद्ध होता जाता है। इस श्रवण-पद्धति की महिमा का श्रीमद्भागवत में गान है, 'श्रीभगवान् की कथा दिव्य शक्तियों से पूर्ण है, जिनकी अनुभूति भक्तों की गोष्ठी में उत्सुकतापूर्वक भगवत्कथा का श्रवण-कीर्तन करने से होती है। मनोधर्मियों अथवा लौकिक विद्वानों के सग से इस विज्ञान को नहीं जाना जा सकता।'